गन्ना उत्पादन में बेहतरी को हुआ मंथन

पुस्तक विमोचन करते अतिथि, कार्यक्रम में मौजूद गन्ना वैज्ञानिक व संबोधित करते कुलपति

जागरण

पूसा, ससं : राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित प्लैक्स हाउस में मंगलवार को गन्ना की उत्पादकता बढ़ाने को लेकर दो दिनी गन्ना वैज्ञानिकों की बैठक हुई। इसमें देश के विभिन्न गन्ना अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने भाग लिया। मौके पर भारतीय अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के (फसल विज्ञान) उप महानिदेशक डा. जेएस सन्धु ने वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में ईख की उत्पादकता संतोषजनक नहीं है। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। भारत में 150 गन्ने की प्रभेद किसानों के लिए विकसित है। राष्ट्रीय स्तर पर सामान्य 70 टन प्रति हेक्टेयर उत्पादकता है। जबकि बिहार में लगभग 50 टन प्रति हेक्टेयर उत्पादकता है। उन्होंने किसानों को अच्छे प्रभेद उपलब्ध कराने के साथ-साथ खेतों में प्रत्यक्षण भी करने की आवश्यकता जतायी। मुख्य अतिथि कुलपति डा. एकेपी सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि ईख की उत्पादकता बढ़ाने हेतु यांत्रिकी एवं अच्छे प्रबंधन की आवश्यकता है। यहां वैज्ञानिकों के द्वारा रैतुन प्रबंधन तथा सुक्ष्मजीव द्वारा कीट नियंत्रण तथा सुक्ष्म खाद के उपयोग से गुणात्मक उत्पादन बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। संस्था द्वारा बीओ-47, बीओ-17 एवं बीओ-120 विकसित किये गए हैं जो किसान एवं गन्ना मिल के लिए काफी लाभदायक है। गन्ना लगाने का समय अभी चल रहा ऐसे में यह वैज्ञानिकों की समूह बैठक गन्ना के विकास के लिए लाभदायक होगी। गन्ना अनुसंधान केंद्र लखनऊ के

- देश भर से जुटे वैज्ञानिक
- उपमहानिदेशक ने कहा- बिहार में ईख का उत्पादन संतोषजनक नहीं

परियोजना समन्वयक ओके सिन्हा ने देश के विभिन्न भागों में गन्ना पर हो रहे अनुसंधान की विस्तार पूर्वक चर्चा की और कहा कि गन्ना उत्पादन बढ़ाने के लिए किसान गन्ने की खेती में नाइट्रोजन, फासफोरस, पोटाश एवं सल्फर का उपयोग करें। शरदकालीन गन्ने की खेती के साथ दलहनी फसल लगाएं इससे दलहन उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ ईख उत्पादन में भी वृद्धि होती है। गन्ना प्रजनन संस्थापक कोयम्बटूर के निदेशक डा. वक्शी राम ने कहा कि गन्ना में 11.11 प्रतिशत सुगर का रिकवर किया गया है। यदि दिसंबर के प्रथम सप्ताह में गन्ने की कटाई की जाए तो यह रिकवरी ज्यादातर मिलने की संभावना है। सरकार के द्वारा जीएम नामक प्रभेद के प्रत्येक्षण की अनुमति दी जाए तो सुगर रिकवरी में वृद्धि की जा सकती है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ के निदेशक डा. एडी पाठक ने कहा कि गन्ना उत्पादन करने वाले किसानों को उत्पादन (खेती में) कम लागत लगाना चाहिए। नवीनतम तकनीक के साथ-साथ अच्छे प्रभेद का चुनाव करना आवश्यक है। तभी गन्ना उत्पादन करने वाले किसानों के लिए गन्ना की खेती लाभदायक होगी। उन्होंने कहा कि गुड़, चीनी, इनथोल एवं छोआ आदि के लिए जो प्रभेद विकसित हुए है उसका चयन किसान अपने क्षेत्र के हिसाब से करें। वैज्ञानिकों की समूह बैठक में गन्ना उत्पादन पर एक किताब का विमोचन भी किया गया। साथ-साथ शॉल एवं बुके से अतिथियों का स्वागत भी किया गया। सोनी कुमारी, संगीता कुमारी आदि के द्वारा स्वागत गान प्रस्तुत किया गया। वहीं स्वागत संबोधन विश्वविद्यालय के निदेशक अनुसंधान डा. जेपी उपाध्याय ने किया। मौके पर विश्वविद्यालय के डा. सियाराम सिंह, डा. एसपी सिंह, डा. मिथिलेश कुमार, डा. आरके झा, डा. देवेंद्र सिंह, डा. एसके वार्ष्णे सहित कई वरीय वैज्ञानिक मौजूद थे। मंच संचालन पंकज कुमार ने किया। वहीं धन्यवाद ज्ञापन डा. एसएस पांडेय ने किया।